मधुर संदेश

डा. इल्तिफ़ात अहमद
एम.एस सी. बी. टी. (अलीग)

मधुर सन्देश संगम
अबुल फ़ज़्ल इन्कलेव जामिआनगर, नई दिल्ली-25

दयावान, कृपाशील ईश्वर के नाम से

इन्सान एक सामाजिक प्राणी है। समाज उसकी आवश्यकता है। यदि समाज संगठित न हो तो जान-माल इज़्ज़त आबरू सब ख़तरे में पड़ जाते हैं। अतः एक संगठित समाज इन्सान की ज़रूरत है। समाज को संगठित करने के लिए कुछ क़ायदे और क़ानून की ज़रूरत होती है। क़ायदे और क़ानून जो समाज को संगठित करने के लिए आवश्यक हैं उनको हिन्दी भाषा में "जीवन-सिद्धान्त", उर्दू भाषा में "निज़ामे ज़िन्दगी", अंग्रेज़ी भाषा में "वे आफ़ लाइफ़" (Way of Life) या सोशल आर्डर (Social Order) और अरबी भाषा में "दीन" कहते हैं।

दीन समाज की सबसे बड़ी ज़रूरत है। यदि वह ठीक हो तो पूरा समाज ठीक हो जाता है। यदि वह बिगड़ जाये तो पूरा समाज बिगाड़ की लपेट में आ जाता है। इसलिए अच्छा जीवन सिद्धान्त या दीन समाज की सबसे बड़ी आवश्यकता है। अच्छा दीन कैसे बनेगा? कौन बनायेगा? इस सम्बन्ध में राजनीति शास्त्रियों ने कहा है कि जो भी जीवन-सिद्धान्त बनाये उसमें तो कम से कम तीन शर्तें अवश्य ही होनी चाहिएं–

(१) निष्पक्षता (Impartiality) : यह बात तो समझ में आती है कि यदि क़ानून और नियम बनाने वाला निष्पक्ष नहीं है तो जीवन-सिद्धान्त कभी ठीक नहीं बन सकता। परन्तु इन्सानों में एक आदमी भी निष्पक्ष नहीं है। अतः पहली शर्त इन्सान पूरी नहीं करता।

(२) मनोविज्ञान की जानकारी : जीवन-सिद्धान्त अथवा दीन शौक़िया नहीं बनता बल्कि आवश्यकतानुसार बनता है। अतः जब तक कोई मानव के मनोविज्ञान उसकी ज़रूरतें और उसकी समस्याओं

को पूर्णरूप से न जानता हो, तो सही जीवन-सिद्धान्त नहीं बना सकता। इस विषय में भी मानव खरा नहीं उतरता।

(३) भविष्य का ज्ञान : जीवन-सिद्धान्त आज की समस्याओं को सामने रख कर बनाया जाता है, परन्तु लागू कल होगा और कल के बारे में इन्सान कुछ नहीं जानता। इस प्रकार जीवन-सिद्धान्त अथवा दीन बनाने के लिए मानव तीन शर्तों में से एक भी पूरी नहीं करता। परन्तु ईश्वर इन तीनों शर्तों को भली-भांति पूरी करता है। ईश्वर की दृष्टि में काले और गोरे सब बराबर हैं। ईश्वर के अतिरिक्त कोई निष्पक्ष हो ही नहीं सकता। रही दूसरी शर्त तो ईश्वर ही ने मानव को बनाया है, उसके मनोविज्ञान को वह नहीं समझेगा तो और कौन समझेगा? और तीसरी शर्त के बारे में सभी लोग जानते हैं कि भविष्य का ज्ञान केवल ईश्वर ही को है। अतः सबसे अच्छा जीवन-सिद्धान्त केवल ईश्वर ही बना सकता है। परन्तु बहुत से लोग आज ईश्वर ही को मानने को तैयार नहीं हैं। उनका कहना है कि यह समस्त ब्रह्माण्ड स्वयं बन गया है और स्वयं चल भी रहा है। न इसका कोई बनाने वाला है और न चलाने वाला। लेकिन वैज्ञानिक भली-भाँति जानते हैं कि दुनिया सदैव से मानती रही है कि ब्रह्माण्ड का एक बनाने वाला है। अतः जब तक हम अपनी बात को साइंन्स द्वारा साबित नहीं कर देंगे दुनिया हमारी बात को मानने के लिए तैयार नहीं हो सकती है।

इस सम्बन्ध में सबसे पहला वैज्ञानिक जो मैदान में आया वह डाल्टन था। उसने साइंस द्वारा सिद्ध किया कि यह समस्त ब्रह्माण्ड जिस में सूर्य, चाँद, आकाश गंगा (Galaxy), नीहारिका (Nebula), आदमी, जानवर सभी हैं, यह सब के सब परमाणु (Atom) से बने हुए हैं। दूसरा वैज्ञानिक लेन्डार्ट मैदान में आया और उसने प्रयोग द्वारा यह सिद्ध किया कि परमाणु (Atom) अमर है। उसने बर्फ़ का एक टुकड़ा मेज़ पर रख दिया थोड़ी देर बाद वह ग़ायब हो गया। बर्फ़ का

टुकड़ा तो समाप्त हो गया लेकिन वह टुकड़ा जिन परमाणुओं से बना हुआ था, वह अब भी जीवित है उसने अपना रूप बदल दिया है। पहले वह ठोस के रूप में था। अब द्रव के रूप में है। पानी को गरम किया तो थोड़ी देर के बाद ग़ायब हो गया। पानी तो अवश्य ग़ायब हो गया परन्तु जिन परमाणुओं से पानी बना था वह अब भी मौजूद है। उनकी शक्ल बदल गई है। पहले द्रव के रूप में था और अब गैस के रूप में है। अतः परमाणु अमर है। जो वस्तु मरती नहीं है वह पैदा भी नहीं होती है। अतः यह ब्रह्माण्ड न पैदा हुआ और न मरेगा सदैव से रहा है और सदैव रहेगा। इस ब्रह्माण्ड का न कोई बनाने वाला है और न बनाने वाले की आवश्यकता है।

इन दोनों वैज्ञानिकों के प्रयोगों ने दुनिया में हलचल मचा दी। अधिकांश पढ़े-लिखे लोग मान गये कि वास्तव में ब्रह्माण्ड का कोई बनाने वाला और न कोई चलाने वाला है। परन्तु एक छोटा वर्ग अवश्य उपस्थित था, जो इन वैज्ञानिकों के विचार से बिल्कुल ही सहमत न था। मगर इन बेचारों के पास इस विचारधारा के विरोध में बोलने की भी शक्ति न थी। फिर भी दबी ज़ुबान से उन्होंने इन वैज्ञानिकों से पूछा कि जब यह ब्रह्माण्ड स्वयं बन गया, न उसका कोई बनाने वाला और न चलाने वाला है तो यह सूरज, चाँद, तारे, इत्यादि कैसे बन गये और कैसे घड़ी के पुर्ज़े की तरह, चल रहे हैं? जवाब मिला कि जब कोई वस्तु गोलाई में घूमती है तो उसके प्रत्येक कण में एक शक्ति उत्पन्न हो जाती है जो उस कण को केन्द से दूर फेंकती है। इसी शक्ति को साइन्स में अपकेन्द्रीय बल (Centrifugal force) कहते हैं। एक गैस का गोला नाच रहा था। इसी सिद्धान्त के अनुसार उसमें से एक टुकड़ा छटका और पृथ्वी बन गयी। दूसरा छटका तो वृहस्पति ग्रह (Jupiter) बन गया। इसी प्रकार बहुत से ग्रह बन गये। यह गोला नाच रहा था। इसीलिए इससे निकले हुए ग्रह गोले के गिर्द

घूमने लगे और इस प्रकार पूरा सौर-मंडल बन गया। इसके बनने में किसी बनाने वाले की कोई ज़रूरत नहीं है।

उनसे पूछा गया कि हमारी पृथ्वी की सूर्य से दूरी कितनी है? जवाब मिला ९३ मिलियन मील फिर पूछा गया कि दूरी ९३ मिलियन मील ही क्यों है? जवाब मिला कि जो टुकड़ा छटका उसमें इत्तिफ़ाक़ से इतना ही अपकेन्द्रीय बल था कि ९३ मिलियन मील तक पहुँचते-पहुँचते रुक गया, यह केवल इत्तिफ़ाक़ था कि इतना ही अपकेन्द्रीय बल बना....यह भी सम्भव था कि अपकेन्द्रीय बल बहुत ज़्यादा होता और पृथ्वी अपनी वर्तमान दूरी से दुगुनी दूरी पर रुकती। यह भी सम्भव था कि बल इतना कम बनता कि पृथ्वी वर्तमान दूरी से आधे पर रुकती, परन्तु दोनों दशा में इससे बड़े भयानक परिणाम सामने आते और सूरज से निकट होने के कारण सूर्य की किरणें इतनी तेज़ होतीं कि हम जल-भुन गये होते। यदि दूरी दूनी होती तो हम सूर्य से इतना दूर हो गये होते कि जाड़ों में पृथ्वी जम कर बर्फ़ हो गयी होती और हम सब मर गये होते—यदि दूरी को ध्यान में रखकर देखा जाए तो साफ़ मालूम होता है कि इसके पीछे एक दिमाग़ है, जिसने पृथ्वी की दूरी को आवश्यकता अनुसार रखा ताकि इन्सान उस पर आराम से रह सके। यदि दूरी कम होती तब भी हम मर जाते और यदि दूरी ज़्यादा होती तब भी हम मर जाते। परिस्थितियाँ बता रही हैं कि ब्रह्माण्ड का एक बनाने वाला है और उसने पृथ्वी की दूरी ठीक-ठीक उतनी रखी है जितने में हम आराम से रह सकें।

पूछा गया कि हमारी पृथ्वी का आकार क्या है? जवाब मिला कि इसका अर्द्ध व्यास ४००० मील है। फिर पूछा गया कि ४००० मील ही क्यों इससे कम या इससे ज़्यादा क्यों नहीं हुआ? जवाब मिला कि ब्रह्माण्ड का कोई बनाने वाला तो है नहीं इत्तिफ़ाक़ से इतनी ही मिट्टी छटकी जिससे यह पृथ्वी बन गयी लेकिन यह भी सम्भव था कि

मिट्टी कम छटकती और इसका आकार आधा हो जाता और यह भी सम्भव था कि मिट्टी ज़्यादा छटकती और आकार दुगुना हो जाता, लेकिन दोनों परिस्थितयों में बड़े भयानक परिणाम सामने आते, यदि पृथ्वी का आकार आधा हो गया होता तो पृथ्वी की गुरुत्वाकर्षण शक्ति १/४ रह जाती और यह वायुमण्डल जो गुरुत्वाकर्षण शक्ति के कारण पृथ्वी से चिपका हुआ है, गुरुत्वाकर्षण शक्ति कम होते ही यह वायुमण्डल क्षितिज से भाग जाता और बिना हवा के कौन रह सकता है। चाहे घण्टे दो घण्टे हम रह भी जायें तो उससे पहले एक विपत्ति और आ जाती—प्रतिदिन दो अरब उल्का पिण्ड हमारी पृथ्वी के क्षेत्र में प्रवेश करते हैं उनकी गति ३० से ४० मील प्रति सेकण्ड होती है, जो हवा से रगड़ खा कर जलकर राख हो जाते हैं। केवल उनकी राख पृथ्वी तक पहुँचती है, जब हवा न होती तो वह दो अरब उल्का पिण्ड वह भयानक बमबारी करते कि पृथ्वी पर काई जीवित नहीं रह सकता। यदि पृथ्वी का आकार दुगुना होता हो गुरुत्वाकर्षण शक्ति चौगुना हो गयी होती और हमारा भार इतना ज़्यादा हो गया होता कि हम चल-फिर न सकते। वायु का दबाव इतना ज़्यादा हो जाता कि हमारी हड्डी-पसली चूर हो जाती, पानी भाप न बनता और वर्षा बिल्कुल न होती तो यह सारी परिस्थितियाँ बता रही हैं कि ब्रह्माण्ड का कोई बनाने वाला अवश्य है, जिसने अपने मन्सूबे से उसका आकार उतना ही रखा जितने में हम आराम से रह सकें। यदि आकार कम होता तब भी हम मर जाते और यदि आकार ज़्यादा होता तब भी हम मर जाते।

जो वायुमंडल हमारी पृथ्वी को अपने घेरे में लिये हुए है, इसमें बहुत-सी गैसें हैं। पूछा गया : इनमें कौन-कौन गैसें हैं, तो उत्तर मिला कि आक्सीजन, नाइट्रोजन, कार्बनडाई आक्साइड इत्यादि बहुत-सी गैसे हैं। पूछा गया : इसमें इतनी सब गैसें क्यों हैं? जवाब मिला : जो

हवा यहाँ आई थी उसमें यह गैस पहले से मौजूद थी। पूछा गया : यदि इसमें आक्सीजन न होती तो क्या होता? जवाब मिला तो हम सब मर जाते, क्योंकि आक्सीजन के बिना कोई जीवित नहीं रह सकता।

यह साफ़ मालूम हो रहा है कि ब्रह्माण्ड का एक बनाने वाला अवश्य है, जिसने पृथ्वी की दूरी भी उतनी रखी जिसमें इन्सान ज़िन्दा रह सके। पृथ्वी का आकार भी उतना ही रखा कि इन्सान धरती पर आराम से रह सके। वायुमण्डल में भिन्न-भिन्न गैसों का एक विशेष अनुपात रखा कि हम अराम से सांस ले सकें एक तरफ़ यह सारी परिस्थितियाँ बता रही हैं कि ब्रह्माण्ड का कोई बनाने वाला अवश्य है और दूसरी तरफ़ गुरुत्वाकर्षण सिद्धान्त (Quantum Theory) ने डाल्टन और लेन्डार्ट के सिद्धान्त को ग़लत साबित कर दिया और बताया कि परमाणु अमर नहीं है।

इन सवालों और जवाबों ने आंखों के सामने से वे सारे परदे हटा दिये, जो इस ब्रह्माण्ड और उसके भीतर होने वाले परिवर्तनों के विषय में उत्पन्न हो गये थे और दुनिया यह समझने लगी थी यह सब कुछ एक इत्तिफ़ाक़ का नतीजा है और इस ब्रहमाण्ड का न कोई चलाने वाला और न बनाने वाला है। लेकिन अब सारी ग़लतफ़हमियां दूर हो चुकी हैं और इन सवालों और जवाबों ने हमारी आँखें खोल दी हैं। अब हम पूरे विश्वास के साथ कह सकते हैं कि इस ब्रह्माण्ड का एक बनाने वाला है और वही उसको कुशलता के साथ सुव्यस्थित रूप से चला रहा है, और इस ब्रह्माण्ड के अन्दर एक ज़बर्दस्त योजना काम कर रही है।

आज उन लोगों की अक्ल पर हंसी आ रही है, जो यह कहते थे कि ब्रह्माण्ड बिन बनाये बन गया है और बिना चलाये चल रहा है। अब शायद ही कोई पढ़ा लिखा आदमी हो जो इस प्रकार की मूर्खतापूर्ण बातें करता हो। साइंस का एक नियम है कि चीज़ें गरम करने से बढ़ती

हैं और ठण्डी करने से सिकुड़ती हैं, परन्तु आज मालूम हुआ कि यहां कोई लगा-बंधा नियम नहीं है, बल्कि ब्रहमाण्ड के पीछे एक ज़बर्दस्त हिकमत और योजना काम कर रही है। अतः यही गर्मी से बढ़ने और सर्दी से सिकुड़ने का नियम जब पानी में देखा गया तो गर्म करने से वास्तव में बढ़ता है और ठण्ड में सिकुड़ता है। परन्तु चार डिग्री सेल्शियस पर पहुंच कर यह नियम बिल्कुल उलट जाता है। पानी सिकुड़ने के बजाय बढ़ना शुरू कर देता है, जिससे ज्ञात होता है कि इसके पीछे एक ज़बर्दस्त हिकमत काम कर रही है। अगर यह नियम उलट न गया होता तो पानी के अन्दर रहने वाले सारे जीव-जन्तु मर जाते। यही चीज़ें हैं जिससे मजबूर होकर एक वैज्ञानिक को कहना पड़ा: "There is a mind behind this". (इसके पीछे एक दिमाग़ काम कर रहा है।)

अब इंसान इस बात पर सहमत है कि इस ब्रह्माण्ड का कोई बनाने वाला है। यह विचार मानव जीवन के लिए बहुत महत्त्वपूर्ण है और इस विचार धारा ने सारे इंसानों को एक प्लेटफ़ार्म पर ला दिया है। आज दुनिया यह मान रही है कि इस ब्रह्माण्ड का एक बनाने वाला है यद्यपि इस बनाने वाले को लोग अलग-अलग नामों से पुकारते हैं। कोई उसको अल्लाह कहता है, कोई गॉड कहता है, तो कोई ईश्वर लेकिन बड़ी ख़ुशी की बात है कि सबका मतलब उसी एक बनाने वाले से है- यह मानव के एक विश्व समाज बनाने की तरफ़ यह पहला क़दम है।

लेकिन केवल ईश्वर को मान लेने से मानव जीवन में कोई सुधार नहीं आ सकता है जब तक कि उस ईश्वरीय आदेशों पर लोग चलने के लिए तैयार न हों। बहरहाल आज की पढ़ी-लिखी दुनिया इस बात को जानती है कि ईश्वर को मानना और उसके आदेशों पर चलने के लिए तैयार न होना बहुत बड़ी मूर्खता की बात है।

ईश्वरीय आदेश

पूरे ब्रह्माण्ड में चाहे सूरज, चाँद तारे हों या आकाशगंगा और नीहारिका हो या आदमी, जानवर या पौधे हों-सब ईश्वर के बनाये हुए हैं। मगर इनमें सर्वश्रेष्ठ मनुष्य ही है। इसीलिए उसको ईश्वर ने **सुन्दर शरीर और अच्छी योग्यताएं देकर इस ज़मीन पर आबाद किया** और उसकी ज़रूरत की सारी वस्तुओं का यहाँ पर भण्डार जमा कर दिया। आदमी को पांच इन्द्रियां देकर यहाँ छोड़ दिया कि वह अपनी बुद्धि और इन्द्रियों की सहायता से नयी-नयी चीज़ों का पता लगाये और लाभ उठाये। इसीलिए ईश्वर ने उसको इस क्षेत्र में केवल पैग़म्बर (ईशदूत) या किताब देने की आवश्यकता ही नहीं समझी वरन ज्ञानात्मक चीज़ें भी यहां उसको सोचने समझने के लिए उपलब्ध करा दीं। जैसे यह ब्रह्माण्ड क्या है? कैसे बना और कैसे चल रहा है? आदमी कहां से आ गया? उसका सम्बन्ध ब्रह्माण्ड से और अपने जैसे दूसरे इन्सानों से क्या है? इत्यादि। इस जानकारी के बग़ैर इंसान वास्तव में इन्सान नहीं बन सकता। न ईश्वर की दी हुई वस्तुओं से पूर्णतया लाभ उठा सकता बल्कि उल्टे इतना गिर जाएगा कि अपने ही लिए घातक बन जाएगा। **इन सारे सवालों का सही और सर्वसम्मत जवाब मानव-मस्तिष्क में नहीं है। अटकलें हो सकती हैं** और होती भी हैं। लेकिन ये अटकलें अवास्तविक ही होती हैं। अनुमान पर आधारित होती हैं। इन प्रश्नों का सही उत्तर तो ईश्वर ही के पास है, लेकिन उसने कभी ऐसा नहीं किया कि एक किताब छापकर एक-एक आदमी के हाथ में दे दी हो और कह दिया हो कि इसको पढ़कर जान लो बल्कि ईश्वर ने इस ज्ञान को मानव तक पहुँचाने के लिए पैग़म्बरों को माध्यम बनाया और पैग़म्बरों को आदेश दिया कि वह इस ज्ञान को मानव तक पहुँचायें। ईश्वर ने इस ज्ञान को 'वहच' (प्रकाशना) द्वारा पैग़म्बर तक पहुँचाया और उन्हें ज़िम्मेदार बनाया

कि इस ज्ञान को मानव तक पहुँचायें।

पैग़म्बर का काम केवल इतना नहीं है कि वह इस ज्ञान को लोगों तक पहुँचाए बल्कि उसका काम यह बताना भी है कि ज्ञान के अनुसार ईश्वर और मानव और मानव का मानव से क्या सम्बन्ध होना चाहिए? यह ज्ञान किस प्रकार की विचारधारा, नैतिक दृष्टिकोण और संस्कृति चाहता है। इस ज्ञान के अनुसार मानव समाज का आर्थिक, राजनैतिक, सामाजिक नैतिक और अन्तर्राष्ट्रीय दृष्टिकोण क्या होना चाहिए?

पैग़म्बर केवल पूजापाठ और रीतिरिवाज (Ritual and worship) लेकर नहीं आता जिस को आजकल की भाषा में धर्म या मज़हब (Religion) कहते हैं। बल्कि वह तो एक पूर्ण जीवन सिद्धान्त लेकर आता है, जिसको अरबी भाषा में दीन (Way of life) कहा जाता है।

जब किसी देश में दीन अथवा जीवन-सिद्धान्त स्थापित हो जाता है, तो वहाँ का पूरा जीवन (व्यक्तिगत और सामूहिक) दीन के कन्ट्रोल में आ जाता है। जबकि मज़हब का मनुष्य से व्यक्तिगत सम्बन्ध है। जो चाहे मज़हब को माने और जो चाहे न माने। कितने लोग हैं जो कहते हैं कि हम किसी मज़हब को नहीं मानते, मज़हब तो एक ढोंग है। जो मज़हब को मानते भी हैं, उनका भी यह हाल है कि अगर वह चाहें तो पूजा-पाठ करें और चाहें तो न करें, कोई पूछने वाला नहीं है। परन्तु दीन अथवा जीवन सिद्धान्त एक आवश्यकता है। यदि आप ईश्वर को नहीं मानते और उसके भेजे हुए जीवन-सिद्धान्त को नहीं लेना चाहते हैं तो न लीजिए, परन्तु स्वयं एक दीन बनाना पड़ेगा जैसे दीन बादशाहत, दीन कम्युनिज़्म या दीन पूंजीवादी, प्रजातन्त्र आदि।

ईश्वर की यह योजना है कि पूरे मानव जगत को एक ईश्वर, एक पैग़म्बर और एक ईश्वरीय आदेश द्वारा सबको एक मानव समाज

बना दिया जाए, ताकि रोज़-रोज़ का आपसी टकराव समाप्त हो जाए, परन्तु आरम्भ में ऐसा करना सम्भव न था। यातायात के साधन ठीक न थे। कहीं दो देशों के बीच समुद्र था, तो कहीं मरुस्थल और कहीं पहाड़। अतः ईश्वर ने अपना आदेश भिन्न-भिन्न ईशदूतों द्वारा भिन्न भिन्न देशों में भेजा। हर पैग़म्बर ईश्वरीय आदेश लेकर ही आया, उसको अपने देश की भाषा में पेश किया।

जब किसी देश में पैग़म्बर ने ईश्वरीय आदेश चलाया तो वहाँ के चालाक लोग समझ गये कि जब यह ईश्वरीय आदेश चलेगा, तो सारे लोगों के सिर ईश्वर के आगे झुक जायेंगे, मेरे आगे किसका सिर झुकेगा सब लोग ईश्वर का आदेश मानेंगे तो मेरा हुक्म किस पर चलेगा? मैं ईश्वरीय आदेश को न चलने दूंगा। जैसे ही पैग़म्बर दुनिया से गया, इन चालाक लोगों ने ईश्वरीय आदेश से सामूहिक जीवन-सम्बन्धी आदेशों को निकाल बाहर किया और केवल पूजा-पाठ और रीति-रिवाज के आदेशों को बेकार समझ कर रहने दिया और वहां अपनी बादशाहत क़ायम कर दी। जनता ने ईश्वरीय आदेशों के पूजा-पाठ के आदेश को जमा करके एक मज़हब बना लिया। इस प्रकार ईश्वर की ओर से ईश्वरीय आदेश आता रहा और स्वार्थी लोगों द्वारा बिगाड़ा जाता रहा और बिगाड़ के साथ एक मज़हब भी बनता रहा इस प्रकार बहुत से मज़हब और मत बन गये, जैसेः हिन्दू, बौद्ध, जैन, सिख, ईसाई इन सबमें जीवन-सिद्धान्त नहीं है।

आख़िरी पैग़म्बर

जब दुनिया में उन्नति हुई और यातायात के साधन ठीक हो गये, तो ईश्वरीय आदेशों और सिद्धान्तों के प्रचार के लिए पूरे संसार के लिए एक पैग़म्बर भेजने की योजना बनी। इस योजना में दो बातों पर

विशेष विचार करना था कि जब पूरे संसार के लिए एक ही पैग़म्बर भेजना है तो उसका प्रचार-क्षेत्र एशिया, यूरोप और अफ़्रीक़ा कहां रखा जाय? अतः आख़िरी पैग़म्बर का प्रचार-केन्द्र ऐसे स्थान पर रखा गया, जहाँ से तीनों महाद्वीपों में प्रचार हो सके। मध्यपूर्व (Middle East) ही वह क्षेत्र है, जहाँ से तीनों महाद्वीपों में प्रचार हो सकता है क्योंकि यहां तीनों महाद्वीपों का संगम है। जब किसी देश में पैग़म्बर ईश्वरीय आदेश और सिद्धान्त के प्रचार के लिए गया, तो वहाँ का बादशाह चौकन्ना हो गया और समझ गया कि जब ईश्वरीय सिद्धान्त देश में क़ायम होगा, तो मेरा तख़्ता पलट जाएगा। अतः फ़ौरन मैदान में आ गया और किसी पैग़म्बर को ज़िन्दा जला दिया और किसी को आरों से चिरवा दिया अतः प्रचार केन्द्र के लिए ऐसा स्थान होना चाहिए जहाँ बाहशाहत (King Ship) न हो।

उस समय अरब ही मध्यपूर्व में एक ऐसा देश था, जहाँ बादशाहत नाम की कोई चीज़ न थी। पूरे देश में छोटे-छोटे क़बीले थे और क़बीले का सरदार अपने आदमियों का ज़िम्मेदार था। ईश्वर ने अपने आख़िरी पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) को अरब के प्रसिद्ध नगर मक्का में पैदा किया। आप मक्का के सबसे बड़े क़बीले क़ुरैश के सरदार के घर पैदा हुए। क़ुरैश का कोई व्यक्ति हज़रत मुहम्मद (सल्ल) का विरोध नहीं कर सकता था, क्योंकि आप इस क़बीले के सरदार के घर पैदा हुए थे। दूसरे क़बीले के लोग आपसे नहीं बोल सकते थे, क्योंकि आप का क़बीला सबसे बड़ा था। इस प्रकार आपको ईश्वरीय जीवन-सिद्धान्त के अनुसार २३ साल में पूरे अरब में व्यक्ति, समाज और राज्य तीनों को ढालने का अवसर मिला।

ईश्वरीय ग्रन्थ

पिछले पैग़म्बरों को ईश्वर की ओर से जो ग्रन्थ मिले थे उनमें लोगों ने घटा-बढ़ा कर के बेकार कर दिया। अन्तिम पैग़म्बर को ईश्वर ने 'क़ुरआन' ईश्वरीय ग्रन्थ के रूप में दिया था और उसकी सुरक्षा का ज़िम्मा स्वयं ले लिया। क़ुरआन की सुरक्षा इस प्रकार की गयी कि क़ुरआन को पूरे ग्रन्थ के रूप में एक साथ नहीं दिया गया, बल्कि थोड़ा-थोड़ा करके "वहय" द्वारा भेजा गया। एक बार थोड़ी-सी आयतें "वहय" (प्रकाशना) द्वारा भेजी गयीं। पैग़म्बर ने अपने मुंशी द्वारा लिखवा दिया, जो लोग लिखना जानते थे, पैग़म्बर से पूछ कर लिख लिया करते थे। जो पढ़ना-लिखना नहीं जानते थे ज़ुबानी याद कर लिया करते। इस प्रकार क़ुरआन थोड़ा-थोड़ा करके आता रहा और पैग़म्बर अपने मुंशी से लिखवाते रहे। पढ़े-लिखे लोग भी साथ-साथ लिखते रहे, ज़ुबानी याद करने वाले ज़ुबानी याद करते रहे, २३ साल में पूरा क़ुरआन उतरा। उस समय पैग़म्बर का लिखवाया हुआ पूरा क़ुरआन तैयार हो चुका था, बहुत से लोग जो साथ-साथ लिखते जा रहे थे, उनके पास लिखित रूप में पूरा क़ुरआन मौजूद था। और हज़ारों आदमी ऐसे थे जिनको पूरा क़ुरआन कंठस्थ था। बाक़ी जितने मुसलमान थे सबको क़ुरआन आधा या पौना याद था, क्योंकि नमाज़ में क़ुरआन पढ़ना ज़रूरी होता है। काग़ज़ भी बनने लगा था। क़ुरआन की लाखों प्रतियां तैयार कर दुनिया के कोने-कोने में पहुँच चुकी थीं, इस क़ुरआन में कौन परिवर्तन कर सकता था? जबकि उसकी सुरक्षा का विशेष प्रबन्ध कर दिया गया था। रमज़ान के महीने में हर मस्जिद में एक हाफ़िज[1] क़ुरआन पढ़ता है और लोग उसके पीछे क़ुरआन सुनते हैं। ऐसे में कौन यह कह सकता है कि क़ुरआन में कोई परिवर्तन हुआ है या हो सकता है, कोई भी चाहे तो

१- हाफ़िज़ उसे कहते हैं जिसे पूरा क़ुरआन कंठस्थ हो।

विश्व के विभिन्न स्थानों से क़ुरआन एकत्र कर उसकी अक्षरशः समानता को देख सकता है।

क़ुरआन ईश्वरीय ग्रन्थ है

इसमें कोई संदेह नहीं है कि क़ुरआन पूर्ण रूप से सुरक्षित है। १५०० वर्ष पूर्व जैसा उतरा था, वैसा आज भी है। उसमें कहीं कोई परिवर्तन नहीं हुआ है, परन्तु यदि वह ईश्वरीय ग्रन्थ नहीं है तो उसका कोई महत्व नहीं है, क्योंकि आज का मनुष्य १५०० वर्ष पहले के मनुष्य से अधिक जानकारी रखता है। इस ग्रन्थ का सारा महत्व इसी में है कि यह ईश्वरीय ग्रन्थ है। ईश्वर ने भी क़ुरआन में जगह-जगह यही कहा है कि क़ुरआन ईश्वरीय ग्रन्थ है, हज़रत मुहम्मद सल्ल० का बनाया हुआ नहीं है। क़ुरआन कहता है-

"इस किताब का अवतरण अल्लाह की ओर से है। जो प्रभावशाली और तत्वदर्शी है।" (अज़ज़ुमरः १)

"हमने यह क़ुरआन तुम पर इसलिए अवतरित नहीं किया कि तुम मुसीबत में पड़ जाओ। यह तो एक अनुस्मारक है, प्रत्येक उस व्यक्ति के लिए जो डरे। उसे उतारा गया है उस सत्ता की ओर से जिसने पैदा किया है धरती को और उच्च आकाशों को।"

(ता० हा० १-४)

"क्या ये कहते हैं कि इस व्यक्ति ने क़ुरआन स्वयं गढ़ लिया है वास्तविक बात यह है कि ये ईमान लाना नहीं चाहते। यदि ये अपने इस कथन में सच्चे हैं तो इसी शान का एक कलाम (वाणी) बना लायें।" (अन-नज़मः ३१-३४)

"जब इन्हें हमारी साफ़-साफ़ बातें सुनायी जाती हैं तो वे लोग जो हमसे मिलने की आशा नहीं रखते हैं कहते हैं कि इसके बदले कोई

और क़ुरआन लाओ या इसी में कुछ संशोधन करो। हे नबी उनसे कहोः मेरा यह काम नहीं है कि अपनी ओर से इसमें परिवर्तन कर लूँ मैं तो बस उस वहय (प्रकाशना) का अनुयायी हूँ जो मेरे पास भेजी जाती है। अगर मैं अपने प्रभु का आदेश न मानूँ तो मुझे एक बड़े भयंकर दिन की यातना का डर है। और कहो अगर अल्लाह की इच्छा न होती तो मैं यह क़ुरआन तुम्हें कभी न सुनाता और अल्लाह तुम्हें इसकी ख़बर तक न देता। आख़िर इनसे पूछ लो कि मैं तुम्हारे बीच एक उम्र गुज़ार चुका हूँ क्या तुम बुद्धि से काम नहीं लेते?"

(यूनुसः १५-१६)

हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) को क़ुरआन ईश्वरीय ग्रन्थ के रूप में दिया गया था। यह कोई अनोखी चीज़ नहीं है। इस से पहले बहुत से पैग़म्बर आ चुके हैं। और उन्हें ईश्वर की ओर से ईश्वरीय ग्रन्थ दिया जा चुका है, जिसको दुनिया मानती है। जैसे हज़रत मूसा (अ०) को तौरात दी गयी, ईसा (अ०) को इन्जील और दाऊद (अ०) को ज़बूर दी गयी। हिन्दू धर्म में माना जाता है कि वेद भी ईश्वरीय ग्रन्थ है और सबसे पुराना ईश्वरीय ग्रन्थ यही है।

जब से मानव ने इस धरती पर क़दम रखा है, ईश्वर की ओर से पैग़म्बर ईश्वरीय ग्रन्थ लेकर आते रहे, लेकिन स्वार्थी लोग उसमें परिवर्तन करके बिगाड़ते रहे। ईश्वरीय ग्रन्थ जितना पुराना है, उसमें उतना ही बिगाड़ आ चुका है। वेद में परिवर्तन के बाद भी कुछ चीज़ें ऐसी पायी जाती हैं जिससे पता चलता है कि वेद भी ईश्वरीय ग्रन्थ रहा होगा। एक पण्डित ने वेदों के बारे में कहा है "एक रत्ती शकर में सेरों नमक मिल चुका है।"

आज किसी क्षेत्र के लोगों का इतिहास और सभ्यता जानने के बहुत से साधन हैं। उनमें से एक नया साधन यह है कि उस समय के

शब्दों के विश्लेषण से वहां की सभ्यता का पता लगाया जा सकता है। इस पर डाक्टर भोलानाथ तिवारी, आचार्य क्षितिज मोहन सेन, गुणाकर मूले आदि ने बहुत सा काम किया है।

संस्कृत में एक शब्द है "श्मशान" जो उस स्थान के लिए बोला जाता है जहाँ मुर्दे जलाए जाते हैं परन्तु इस शब्द के विश्लेषण से पता चलता है कि यह शब्द उस स्थान के लिए बोला जाता है जहाँ मुर्दे ज़मीन में गाड़े जाते हैं। डाक्टर भोलानाथ तिवारी अपनी पुस्तक 'शब्दों का जीवन' में कहते हैं कि "शब्द" "श्मशान" यह बताता है कि हिन्दू पहले मुर्दे जलाते नहीं थे बल्कि मुसलमानों और ईसाइयों की तरह गाड़ते थे।" आचार्य क्षितिज मोहन सेन अपनी पुस्तक "भारतीय संस्कृति" में लिखते हैं कि "शमशान मुर्दे गाड़ने की जगह थी न कि जलाने की।" आज हमारे विद्वानों का विचार है कि आर्य पहले मुर्दे गाड़ते थे जलाने की रस्म बाद में आयी है। वेदों से भी मुर्दे गाड़ने का सुबूत मिलता है। मुर्दे गाड़ते समय जो मंत्र पढ़े जाते थे उन्हीं में से एक मंत्र यह भी है:

"तू अब देखता है लेकिन अब दोबारा सूर्य की रोशनी न देखेगा। ऐ धरती इसे चारों तरफ़ से लपेट ले जिस तरह माँ अपने बच्चे के चारों तरफ कपड़ा लपेट देती है।"

इस प्रकार मुर्दे गाड़ने में यहूदी-ईसाई और मुसलमान की भाँति वेद में भी समानताएं हैं, संभव है वेद भी ईश्वरीय ग्रन्थ रहा हो, क़ुरआन मजीद के ईश्वरीय होने की, पुष्टि स्वयं तत्कालीन इस्लाम विरोधियों के वक्तव्यों से होती है। विरोधी यही रट लगाये हुए थे कि क़ुरआन ईश्वरीय ग्रन्थ नहीं है। वे भली-भाँति जानते थे कि हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) तो पढ़े-लिखे नहीं हैं। ४० वर्ष से उन्हीं के बीच रहकर इतनी उच्च कोटि की अरबी उनके मुंह से कभी नहीं सुनी

गयी। वे यह भी नहीं कह सकते थे कि कौन आदमी उन को यह सिखाता है क्योंकि पूरे अरब में ऐसी अच्छी अरबी कोई नहीं बोल सकता था। अतः क़ुरआन ने इन विरोधियों को चैलेंज किया कि यदि क़ुरआन इन्सान का बनाया हुआ है तो तुम सारे लोग मिल कर पूरा क़ुरआन न सही, एक सूरह ही बना लाओ। परन्तु आज तक किसी ने यह चैलेंज स्वीकार नहीं किया। क़ुरआन केवल आदेशों का ग्रन्थ नहीं है। यह तो ज्ञान का भंडार है।

यहां पर अब मैं कुछ ऐसी सत्य-घटनाएं प्रस्तुत करूंगा, जिनसे क़ुरआन मजीद के ईश्वरीय होने की पुष्टि स्वयं तत्कालीन इस्लाम विरोधियों के वक्तव्यों से होती है।

अरबों को अपनी अरबी भाषा के उच्च साहित्यिक स्तर पर बड़ा गर्व था। वे दूसरों को अजमी अर्थात गूंगा कहते थे। हज के समय और मेलों में अरबी में विद्वता की प्रतियोगिता होती थी जो सबसे अच्छी अरबी प्रस्तुत करता था, उसका नाम होता। और उसे पुरस्कार दिया जाता। वहाँ का सबसे बड़ा सम्मान यह था कि उसकी कविता को रेशम के कपड़े पर सोने के धागे से लिख कर "काबा" के अन्दर लटका दिया जाता। अब तक यह पुरस्कार सात आदमी पा चुके थे। उन्हें "सबए मोअल्लक़ा" कहा जाता था। इन्हीं में वहाँ का प्रसिद्ध कवि "लबीद" भी था। एक दिन लबीद ने अपनी एक ताज़ा कविता लिख कर काबा के दरवाज़े पर लटका दी। एक मुसलमान को शरारत सूझी और उसने क़ुरआन की छोटी-सी सूरह अल कौसर जिसमें केवल तीन आयतें थीं लिख कर लबीद की कविता के बग़ल में लटका दी। एक दिन लबीद ने देखा कि मेरे काग़ज़ के बग़ल में एक और काग़ज़ लटक रहा है। लपक कर गया उसको पढ़ा और बोल उठाः—

"यह इन्सान का वाक्य नहीं है।"

यह अरब के एक प्रसिद्ध कवि की गवाही है। विलास्टन ने एक पुस्तक लिखी है, जिसमें वह क़ुरआन के ईश्वरीय ग्रन्थ होने की पुष्टि करते हुए एक बस्ती का हाल ब्यान करता है कि वहाँ के नौजवान क़ुरआन पढ़-पढ़ कर मुसलमान हो जाते थे। वहाँ के बड़े-बूढ़े बहुत परेशान थे। एक दिन सब एकत्र हुए कि बाप-दादा के धर्म को बचाने के लिए कुछ करना चाहिए। यह तय हुआ कि क़ुरआन ही की टक्कर का एक क़ुरआन तैयार किया जाए। उस बस्ती में "इब्नुल मोक़फ़्फ़ा" नामक एक विद्वान रहता था। ये लोग उसके पास गये और एक दूसरा क़ुरआन लिखने का काम उसको सौंपा। उसको भी अपनी योग्यता पर बड़ा गर्व था। वह दो शर्तों के साथ यह काम करने को तैयार हो गया। पहली शर्त यह थी कि काम कठिन है, इसके लिए एक साल का समय चाहिए। दूसरी शर्त यह थी कि उसे एकान्त चाहिए। उसकी दोनों शर्तें मान ली गईं और बस्ती के बाहर एक ख़ेमा लगा दिया गया और उनकी आवश्यकता की वस्तुएं प्रतिदिन वहाँ पहुँचा दी जातीं और उन्होंने काम आरम्भ कर दिया। छह महीने के बाद लोगों ने सोचा कि चलो देखें कि कितना काम हुआ। जब ये लोग खेमे में पहुँचे तो देखा कि फटे हुए काग़ज़ों का ढेर लगा है। लोगों ने पूछा कि यह क्या तो 'इब्नुल मोक़फ़्फ़ा' बोले कि बड़ी मेहनत से जब एक वाक्य बनाता हूँ और उसकी तुलना क़ुरआन से करता हूँ तो वह तुच्छ दिखलाई देता है, उसको फाड़ कर फेंक देता हूँ। अभी तो पहला वाक्य भी नहीं बना। यह एक दूसरे कवि की गवाही थी कि—

"क़ुरआन ईश्वरीय ग्रन्थ है।"

मिस्र में अरबी के एक बहुत बड़े विद्वान थे, जिनका नाम कामिल गीलानी था। वह पक्के मुसलमान भी थे। उनका एक मित्र डाक्टर फिगंल अमरीका में रहता था। वह भी अरबी का बहुत बड़ा विद्वान

था, परन्तु इस्लाम का विरोधी था। दोनों की मित्रता का कारण यही अरबी थी। एक बार गीलानी अमरीका गए और अपने मित्र फ़िंगल के यहाँ ठहरे। एक दिन फिंगल ने गीलानी के कान में कहा "क्या अब भी तुम समझते हो कि क़ुरआन ईश्वरीय ग्रन्थ है?" यह कहकर हंसा। वह यह समझता था कि इसका जवाब तो गीलानी के पास है नहीं। गीलानी ने गम्भीरता से उत्तर दिया कि अनुभव के बाद उत्तर दिया जा सकता है। फिंगल तैयार हो गया। तय हुआ कि "जहन्नम" पर वाक्य बनाया जाए। दोनों काग़ज़ और क़लम लेकर बैठ गए। जब दस-पन्द्रह वाक्य बना चुके तो फिंगल ने कहा कि अब इससे अच्छा वाक्य क्या बनेगा। तो गीलानी ने गर्व से सिर उठाया। फिंगल ने पूछा क्या क़ुरआन में इससे अच्छा वाक्य है? गीलानी ने उत्तर दिया: अच्छा ही नहीं हम लोग उसके आगे बच्चे हैं और यह आयत पढ़ी:

"वह दिन जबकि हम "जहन्नम" से पूछेंगे कि क्या तू भर गई। और वह कहेगी क्या कुछ और है?" (क़ाफ़ ३०)

यह सुन कर फिंगल का मुंह खुला का खुला रह गया और बोल उठा कि "गिलानी मेरी गवाही लिख लो कि क़ुरआन ईश्वरीय ग्रन्थ है।"

अल्लामा मशरिक़ी पंजाब के बहुत बड़े विद्वान थे। रूस, अमरीका और इंग्लैंड सब घूम चुके थे। वे लिखते हैं कि वे लन्दन में एक जगह बैठे हुए थे। इतवार का दिन था, मामूली बून्दा-बान्दी हो रही थी। क्या देखते हैं कि प्रसिद्ध वैज्ञानिक सर जेम्स जोन्स बग़ल में छतरी और बाइबिल हाथ में लिए जा रहे हैं। लपक कर गये और उनके सामने खड़े हो गए और कहा: मैं आप से दो प्रश्न करना चाहता हूँ। पहला प्रश्न यह है कि बूंदा-बांदी हो रही है और आप की छतरी बग़ल में है? यह सुन कर वह मुस्करा और छतरी तान ली। पूछा:

दूसरा प्रश्न क्या है? अल्लामा ने कहा: आप गिरजा घर क्यों जा रहे हैं? थोड़ी देर चुप रहे और यह कह कर चल दिये कि आज शाम ४ बजे मेरे साथ चाय पियो। जब अल्लामा शाम को वहां पहुँचे तो जेम्स की पत्नी ने उनका स्वागत किया। चाय की मेज़ पर बैठते ही जेम्स ने अपनी बात शुरू की। कहा कि जब मैं गिरजाघर में ईश्वर के आगे अपना सिर झुकाता हूँ, तो मुझे बड़ी शान्ति मिलती है। यह अल्लामा के प्रश्न का उत्तर था। इस के बाद बहुत से विषयों पर बात होती रही। जेम्स अरबी का अच्छा विद्वान था। अल्लामा ने उसको क़ुरआन की कुछ आयतें सुनाईं, उन्हीं में एक आयत यह भी थी:

"वास्तविकता यह है कि अल्लाह के बन्दों में से केवल ज्ञान वाले लोग ही उससे डरते हैं।" (फ़ातिर-२८)

यह सुनते ही जेम्स चौंका और कहा कि यह तो तुमने बहुत बड़ी बात कह दी। इस पर तो मैं पचास वर्ष से मनन कर रहा हूँ परन्तु यह बात मेरी समझ में नहीं आई थी। क्या यह क़ुरआन में है? अल्लामा ने कहा कि हाँ। इस पर जेम्स बोल उठा कि:—

"मशारिक़ी मेरी गवाही लिख लो कि क़ुरआन ईश्वरीय ग्रन्थ है। हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) तो पढ़े-लिखे थे नहीं, निश्चय ही यह सत्य उन्हें ईश्वर ने बतलाया।"

यह एक चौथे विद्वान की गवाही है कि "क़ुरआन ईश्वरीय ग्रन्थ है।"

विज्ञान की गवाही

क़ुरआन न तो विज्ञान की किताब है और न भूगोल की। इसका विषय तो मानव है। इसका कार्य-क्षेत्र मानव और उसका जीवन है। क़ुरआन में कहीं-कहीं अपनी बात कहते हुए ब्रह्माण्ड का कुछ वर्णन

भी आया है। वह बस उतना ही है जितना उस समय का मनुष्य समझ सकता था। दूसरी बात यह है कि विज्ञान ने जो ज्ञान दिया है वह न अटल है और न अन्तिम और उसमें बराबर परिवर्तन होता रहता है। जबकि क़ुरआन ईश्वरीय ग्रन्थ है, उसका प्रस्तुत किया हुआ ज्ञान आज तक ग़लत साबित नहीं किया जा सका।

क़ुरआन एक विशेष विचार, एक विशेष सिद्धान्त देकर एक विशेष समाज बनाना चाहता है जो मानव जगत के लिए पथ-प्रदर्शन का काम करे और समाज का एक ऐसा नमूना पेश करे जो इस से पहले कभी नहीं बना था, और एक ऐसा जीवन सिद्धान्त (व्यक्तिगत और सामूहिक) धरती पर स्थापित करे जो अब तक कहीं भी स्थापित न हुआ था। इसीलिए ईश्वर ने ब्रह्माण्ड की जानकारी का काम आदमी की अपनी खोज के लिए छोड़ दिया है।

आज विज्ञान का युग है। विज्ञान द्वारा जो बात कही जाती है उसका एक महत्व होता है। यहाँ पर हम वैज्ञानिक दृष्टिकोण से क़ुरआन के ईश्वरीय ग्रन्थ होने को सिद्ध करेंगे—

सारी दुनिया यह मान रही थी कि पृथ्वी स्थिर है और सूर्य उसके चारों ओर चक्कर लगा रहा है। गैलीलियो पहला व्यक्ति था जिसने सिद्ध किया कि सूर्य स्थिर है और पृथ्वी उसके चारों ओर चक्कर लगा रही है। यह विचार ईसाई धर्म के विरुद्ध था क्योंकि उन्होंने अपनी किताब में वे सारी बातें लिख रखीं थी जिनका उस समय चलन था और कह दिया कि यह ईश्वर की ओर से है। गैलीलियो के इस विचार से उनकी पुस्तकों की साख बिगड़ रही थी। अतः उन लोगों ने गैलीलियो को फांसी दे दी।

यह विचार कि पृथ्वी स्थिर है और सूर्य उसका भ्रमण कर रहा है, इतना पुराना है और लोगों के हृदय में इतना रच बस गया है कि

गैलीलियो के विचार आ जाने के बाद भी पढ़ी-लिखी दुनिया को छोड़ कर बाक़ी सब लोग आज भी मानते हैं कि पृथ्वी स्थिर है और सूर्य उसका भ्रमण कर रहा है। लोग कहते हैं कि सूर्य निकला, सूर्य वहाँ पहुँचा, सूर्य डूब गया। गैलीलियो से पहले तो पढ़ी-लिखी दुनिया भी यही जानती थी कि पृथ्वी स्थिर है। आज विज्ञान एक क़दम आगे बढ़ा है और वह कहता है कि पृथ्वी सूर्य का भ्रमण तो कर रही है लेकिन साथ-साथ अपने सूर्य-मण्डल को लिए हुए २० मील प्रति घण्टा के हिसाब से एक ओर भागी जा रही है। आज से १५०० वर्ष पूर्व दुनिया का कोई आदमी नहीं जानता था कि पृथ्वी सूर्य का भ्रमण करती है और सूर्य सबको लिए हुए एक तरफ़ जा रहा है। परन्तु क़ुरआन ने १५०० वर्ष पूर्व कहा था:

"और सूर्य अपने ठिकाने की ओर चला जा रहा है यह प्रभुत्वशाली सर्वत्र सत्ता का बांधा हुआ हिसाब है।"(यासीन-३८)

उस समय ईश्वर के अतिरिक्त इस बात को कोई नहीं जानता था। अतः क़ुरआन ईश्वरीय ग्रन्थ है।

१६०० ईसवी की बात है कि तुर्की के बेड़े का सेनापति अली रईस अपनी किताब "मियेतुलम ममालिक" में लिखता है कि वह अपना बेड़ा लिए हुए फ़ारस की खाड़ी में था, पीने का पानी जहाज़ में थोड़ा ही रह गया था। फ़ारस की खाड़ी का पानी खारा है और चारों ओर की ज़मीन मरुस्थल है। अतः पानी एक समस्या बनी हुई थी। यह देखकर उसको बड़ा आश्चर्य हुआ कि फ़ारस की खाड़ी में खारे पानी के बीच में मीठे पानी का भण्डार है, लेकिन दोनों पानी आपस में मिल नहीं रहे हैं। जब तक यह बेड़ा फ़ारस की खाड़ी में रहा इसी पानी का प्रयोग करता रहा। जब अमरीकी कम्पनी सऊदी अरब में तेल निकालने आयी तो बहुत दिन तक वह भी इसी पानी से काम चलाती रही।

१६०० ई० से पूर्व दुनिया का कोई आदमी यह नहीं जानता था कि समुद्र के खारे पानी के बीच में मीठे पानी का भी भण्डार होता है। लेकिन दोनों पानी मिलते नहीं है। क़ुरआन ने १५०० वर्ष पूर्व इसका वर्णन किया है। क़ुरआन की सूरः रहमान में कहा गया है:

"दोनों समुद्रों को छोड़ दिया कि परस्पर मिल जायें, फिर भी उनके बीच एक परदा बाधक है जिसे वे पार नहीं करते।"
(१९-२०)

सूरः अल फ़ुरक़ान में है:

"वही है जिसने दो समुद्रों को मिला रखा है। एक स्वादिष्ट और मीठा, दूसरा खारा और कड़ुवा। और दोनों के बीच एक आवरण है (एक रुकावट है) जो गडमड होने से रोके हुए है।" (५३)

१६०० ईसवी से पूर्व ईश्वर के अतिरिक्त कोई इस सच्चाई को नहीं जानता था। अतः हम कह सकते हैं कि क़ुरआन ईश्वरीय ग्रन्थ है।

यह पृथ्वी जिस पर हम सब चल-फिर रहे हैं। १००० मील प्रति घण्टा के हिसाब से लटटू के समान नाच रही है और साथ-साथ ६६,६००, मील प्रति घण्टा के हिसाब से सूर्य का भ्रमण भी कर रही है फिर भी यह धरती कितनी शान्त है न कोई थरथराहट न कोई झटका. इसका कारण क्या है, कोई नहीं जानता था, अभी जल्दी ही एक जर्मन वैज्ञानिक ने सिद्ध किया है कि पृथ्वी के धरातल की शान्ति पहाड़ों के कारण है। क़ुरआन ने १५०० वर्ष पूर्व ही यह बता दिया था कि इसका कारण पहाड़ हैं। क़ुरआन सूरः अम्बिया में कहता है:

"और हमने धरती में पहाड़ जमा दिये ताकि वह इन्हें लेकर लुढ़क न जाए।" (३१)

इस वैज्ञानिक से पहले ईश्वर के अतिरिक्त इस सच्चाई को कोई नहीं जानता था। अतः क़ुरआन ईश्वरीय ग्रन्थ है।

"ईसा से ५००० वर्ष पूर्व की एक क़ौम आद का कुछ वर्णन लोक कथाओं में मिलता है लेकिन बस इतना ही कि अरब के अहक़ाफ़ क्षेत्र में आद नाम की एक क़ौम रहती थी और वह ऐसा मिटी कि उसका नामोनिशान मिट गया। परन्तु क़ुरआन ने इस क़ौम की बड़ी आलोचना की है। क़ुरआन में चौबीस स्थानों पर इस क़ौम का वर्णन आया है। क़ुरआन कहता है कि नूह के तूफ़ान के बाद, यह पहली क़ौम है जिसकी सभ्यता इतनी शानदार थी। उसके विषय में क़ुरआन कहता है:

"यह तुम्हारा क्या हाल है प्रत्येक ऊंचे स्थान पर व्यर्थ एक यादगार भवन निर्मित कर डालते हो। और बड़े-बड़े महलों का निर्माण करते हो मानो तुम्हें सदैव रहना है।"(अश-शुअराः १२६)

"आद का हाल यह था कि वे धरती में बिना किसी हक़ के बड़े बन बैठे। और कहने लगे "कौन है हमसे अधिक शक्तिशाली।"

(हा० मीम अस—सजदाः १५)

"तुमने देखा नहीं कि तुम्हारे प्रभु ने क्या व्यवहार किया ऊंचे स्तम्भों वाले 'इरम' के साथ जिनके सदृश कोई जाति संसार के देशों में पैदा नहीं की गयी थी?" (अल-फ़ज्रः ६-८)

"और आद एक बड़ी तेज़ तूफ़ानी आंधी में विनष्ट किये गये अल्लाह ने उसको निरन्तर सात रात और आठ दिन उन पर लगाये रखा। (तुम वहां होते तो देखते) कि वे वहाँ किस प्रकार पछाड़े हुए हैं जैसे वे ख़जूर के खोखले तने हों। अब क्या उनका कुछ बचा हुआ देखते हो?"

(अल-हाक़्क़ाः ६-८)

परन्तु अब पश्चिम के पुरातत्व शास्त्री क़ुरआन की बात को क्यों मानने लगे? फ़रवरी, १९९२ से पूर्व तक इस क़ौम की शानदार सभ्यता के विषय में कोई नहीं जानता था। फ़रवरी १९९२ की खुदाई में अहकाफ़ के क्षेत्र में एक शानदार बिल्डिंग निकली है जिस में ८ खम्भे हैं जिनका अर्द्ध व्यास १० फुट और ऊंचाई ३० फुट है। उसके अन्दर जो सामग्री मिली है उनसे पता चलता है कि "आद" की सभ्यता बड़ी विकसित थी।

यह सारी बातें इस बात का स्पष्ट सबूत हैं कि:– "क़ुरआन ईश्वरीय ग्रन्थ है।"

ध्रुवीय बल (Centripital Force)

सूर्य अपने सूर्य मण्डल के ग्रहों को अपनी ओर खींच रहा है। इस शक्ति को अपकेन्द्रीय बल (Centrifugal Force) कहते हैं। सारे ग्रह सूर्य से दूर भाग रहे हैं, इस शक्ति को अपकेन्द्रीय बल (Centrifugal Force) कहते हैं। आज यह दोनों बल बराबर हैं। इसलिए ये ग्रह न सूर्य की ओर जा सकते हैं और न सूर्य से दूर भाग सकते हैं, परन्तु जब हिसाब लगाया गया तो पता चला कि ग्रहों का अपकेन्द्रीय बल, सूर्य के ध्रुवीय बल से कम है, इसका अर्थ यह है कि अभी कुछ ग्रह और हैं जो हमारी जानकारी में नहीं हैं, इसलिए यह अन्तर आ रहा है। अब तक आठ ग्रह का पता लगाया जा चुका था। खगोल वैज्ञानिक ग्रहों के खोज में लगे हैं और नवें ग्रह का पता लगा लिया जिसका नाम कुबेर (Pleto) रखा गया है। अब दोनों बल का अन्तर कम तो हो गया है लेकिन खत्म नहीं हुआ। इसका अर्थ यह है कि अभी कुछ ग्रह और हैं जो हमारी पकड़ में नहीं आ सके हैं। १९८७ ई० में चार्ल्स कोएल ने दसवें ग्रह का पता लगा ही लिया जिसका नाम रखा गया: चार्ल्स कोएल आब्जेक्ट। अब अन्तर बहुत कम रह गया

है। लेकिन अभी भी अन्तर है इसका अर्थ यह है कि अभी कोई एक छोटा ग्रह और है। खोज जारी है अभी तक ग्यारहवें ग्रह का पता नहीं लग सका, खगोल वैज्ञानिकों का अटल विश्वास है कि ग्रह ग्यारह हैं। १९८७ से पूर्व ग्रहों की कुल संख्या कोई नहीं बता सकता था। परन्तु क़ुरआन ने पन्द्रह सौ वर्ष पूर्व ही बतला दिया था कि ग्रहों की संख्या ग्यारह है। क़ुरआन सूरः यूसुफ़ में कहता है:

"यह उस समय की बात है, जब यूसुफ़ ने अपने बाप से कहा: पिताजी मैंने स्वप्न देखा है कि ग्यारह सितारे हैं और सूर्य और चांद हैं और वह मुझे सजदा कर रहे हैं।" (यूसुफ़: ४)

विज्ञान की ये गवाहियाँ इतनी अटल हैं और दो और दो चार की तरह इतनी साफ़ हैं कि इनका कोई इनकार नहीं कर सकता। अतः विज्ञान की गवाही है कि "क़ुरआन ईश्वरीय ग्रन्थ है।"

दुनिया यह मान रही है कि ब्रह्माण्ड का एक बनाने वाला है।

उसी एक बनाने वाले को पूरी दुनिया मान रही है। और दूसरी बात यह सिद्ध हुई कि उसी बनाने वाले का आदेश ग्रन्थ "क़ुरआन" सबके लिए आया है। जब दुनिया ने यह मान लिया कि उसी एक बनाने वाले की ओर से पूरी दुनिया के लिए क़ुरआन ईश्वरीय आदेश के रूप में आया है, तो यह भी देखना होगा कि क़ुरआन क्या आदेश देता है। क़ुरआन तो पूरे जीवन (व्यक्तिगत और सामूहिक) के लिए आदेश देता है, जीवन का कोई छोटा या बड़ा क्षेत्र ऐसा नहीं है जिसके लिए आदेश न हों।

यह ग्रन्थ पहली बात यह बतलाता है कि इस ब्रह्माण्ड का एक ही ईश्वर है, वही सारे ब्रह्माण्ड का अकेले बनाने वाला, चलाने वाला, शासक हाकिम इत्यादि सब कुछ वही है। यहां उसकी इच्छा और

आज्ञा के बिना एक पत्ता भी नहीं हिलता, वह हर जगह मौजूद है और सब देख सुन रहा है।

यह ईश्वरीय ग्रन्थ क़ुरआन यह कहता है कि इस लौकिक जीवन में प्रत्येक मनुष्य के जीवन का रिकार्ड तैयार हो रहा है। वीडियो कैसेट में केवल फोटो और आवाज़ टेप होती है, लेकिन ईश्वरीय रिकार्ड में नीयत और इरादा भी टेप होता है।

यह ईश्वरीय ग्रन्थ कहता है कि जीवन केवल तीन हैं। एक इस दुनिया का जीवन जो हम और आप व्यतीत कर रहे हैं। इसको दुनिया या लोक कहते हैं। दूसरा है जब आदमी मर जाता है उसका शरीर तो यहीं रह जाता है परन्तु उसकी रूह (आत्मा) एक स्थान पर रखी जा रही है। इस स्थान को आलमे बरज़ख़ (उर्ध्व लोक और अधोलोक का मध्यवर्ती भाग) कहते हैं। तीसरा यह सारा संसार छिन्न-भिन्न कर दिया जायेगा और सब लोग मर जाएंगे, जिसको प्रलय (क़ियामत) कहते हैं। फिर सारे लोग ज़िन्दा किये जाएंगे, और शरीर के साथ ईश्वर के सामने पेश किये जाएंगे, इस जीवन को आख़िरत (परलोक) कहते हैं। केवल क़ुरआन ही नहीं बल्कि जितने ईश्वरीय ग्रन्थ हैं, केवल तीन ही जीवन मानते हैं। यहूदियों का ईश्वरीय ग्रन्थ "तौरेत" यही तीन जन्म मानता है। ईसाइयों का ईश्वरीय ग्रन्थ "इनजील" यही तीन जीवन मानती है। हिन्दू धर्म का ग्रन्थ "वेद" भी केवल तीन जन्म ही मानता है : लोक, पितृ लोक और परलोक। क़ुरआन कहता है कि परलोक में आदमीं के लौकिक जीवन के रिकार्ड की जाँच होगी, जो क़ुरआन के आदेश कें अनुसार जीवन व्यतीत करेगा वही सफल घोषित किया जायेगा और उसको स्वर्ग में रखा जाएगा, जहाँ हर तरह का आराम है। न वहां बीमारी है, न बुढ़ापा, न मौत। परन्तु जिन का लौकिक जीवन क़ुरआन के आदेश के विरुद्ध व्यतीत हुआ होगा,

उसको नरक में झोंक दिया जाएगा, जहाँ नाना प्रकार के कष्ट हैं, आग, सांप, बिच्छू, यातना और भूख-प्यास, यहां मृत्यु भी न आयेगी कि कष्ट से मुक्ति मिले।

क़ुरआन के प्रति इंसान का रवैया

इस ब्रह्माण्ड का एक बनाने वाला है। उसने अपने अन्तिम दूत हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) द्वारा अपना अन्तिम आदेश-ग्रन्थ क़ुरआन भेजा है। इस ग्रन्थ के प्रति मानव का क्या रवय्या होना चाहिए?

इस पवित्र ग्रन्थ के प्रति एक रवय्या तो उन जाहिल मुसलमानों का है जो इस ईश्वरीय ग्रन्थ को सुन्दर जुज़दान (कवर) में रखकर घर में टांग देते हैं, उसको चूमते और चाटते हैं। कभी-कभी बिना समझे उसका पाठ कर लेते हैं। जब बीमार होते हैं, तो क़ुरआन के अक्षरों को पानी में घोल कर पी लेते हैं। जिन्न और भूत भगाने के लिए क़ुरआन के वाक्यों को काग़ज़ पर लिख कर गले में लटका लेते हैं यह रवय्या अक़्ल से मेल नहीं खाता है और न यह ग्रन्थ ही इसकी आज्ञा देता है।

दूसरा रवय्या यह है कि इन आदेशों का पालन किया जाए, और अपने पूरे जीवन, व्यक्तिगत और सामूहिक जीवन को इसी के अनुसार चलाया जाए। यह रवय्या अक़्ल से मेल भी खाता है और यह ग्रन्थ स्वयं इसका आदेश भी देता है। सही रवय्या यही है कि मानव इसके आगे सिर झुका दे, आत्म समर्पण कर दे। सिर झुकाने और आत्म समर्पण कर देने को अरबी भाषा में "इस्लाम" कहते हैं, मानव जगत को एक प्लेट फ़ार्म पर जमा करने और एक विश्व समाज बनाने के लिए ईश्वर ने तीन बुनियादें दी हैं। (१) एक ईश्वर (२) एक ईश्वरीय ग्रन्थ 'क़ुरआन' (३) इसके प्रति 'इस्लाम' (आत्म समर्पण) का रवय्या। जो व्यक्ति अपना पूर्ण जीवन इन तीन बुनियादों पर

स्थापित करता है तो उसका दोनों जीवन (लोक और परलोक) सफल हो जाता है।

यूरोपीय समाज

यूरोप के अधिकांश लोग ईसाई धर्म के अनुयायी हैं। ईसाई धर्म के पास कोई सामूहिक जीवन सिद्धान्त (Social Order) नहीं है। यह धर्म तो सामूहिकता के ख़िलाफ़ है। उसको केवल व्यक्ति की मुक्ति से मतलब है और उसने मुक्ति का मार्ग भी निर्धारित कर दिया है।

यूरोप वालों ने जब भौतिक उन्नति के मार्ग पर क़दम रखा और विज्ञान और टेक्नालोजी के मैदान में आगे बढ़ना चाहा तो ईसाइयत उनकी सहायता क्या करती? उलटे उनकी राह का रोड़ा बन गयी, किसी को ज़हर का प्याला पीने पर मजबूर किया किसी को फांसी दे दी, किसी की ज़ुबान काट ली और किसी को ज़िन्दा आग में झोंक दिया। अतः सारी जनता को इन बन्धनों को तोड़कर आगे बढ़ना पड़ा।

इन बन्धनों को तोड़कर आगे बढ़ते समय उनके सामने दो मार्ग थे: (१) ईश्वरीय आदेशों के सहारे भौतिक उन्नति के मार्ग पर क़दम रखा जाए। (२) ईश्वर और ईश्वरीय आदेशों को ठोकर मार कर भौतिक उन्नति के क्षेत्र में क़दम रखा जाए। पहली शक्ल के स्वीकार करने को तैयार नहीं थे क्योंकि जीवन के प्रत्येक क्षेत्र के लिए, ईश्वरीय आदेश केवल इस्लाम के पास था और मुसलमानों से उनकी लड़ाई हो चुकी थी। अतः उनको दूसरा ही मार्ग स्वीकार करना पड़ा।

ईश्वरीय आदेश को छोड़कर जैसे-जैसे वे आगे बढ़ते गये, उनकी मानवता घटती गयी और हैवानियत परवान चढ़ती गयी। आज

माता-पिता का कोई सम्बन्ध अपनी सन्तान से है और न सन्तान का सम्बन्ध अपने माता-पिता से। उनका घरेलू जीवन तबाह हो चुका है। सन्तान माता-पिता की ममता न पाकर, हिप्पी, डाकू और क़ातिल हो रही है, बदकारी इतनी बढ़ गयी है कि चौराहे की बेन्चें और पार्क भी बदकारी से न बचे, बेहयाई का यह हाल है कि नंगों का क्लब है, जहां मर्द-औरत सब नंगे ही रहते हैं। एक ही टैंक में मर्द-औरत साथ ही नंगे नहाते हैं। एक मर्द की एक पत्नी तो क़ानूनी होती है पर बहुत-सी औरतें ग़ैर क़ानूनी पत्नी बनी रहती हैं। एक औरत का एक पति तो क़ानूनी रहता है और बहुत से मर्द ग़ैर क़ानूनी पति बने रहते हैं। अमरीका के एक स्कूल में नाबालिग़ लड़कियों की जांच हुई तो चालीस प्रतिशत लड़कियां जिन्सी (Sexual) सम्बन्ध स्थापित कर चुकी थीं। लड़के और लड़कियों में नशीली 'चीज़ों' का प्रयोग बढ़ रहा है। सामाजिक बिगाड़ इतना बढ़ चुका है कि अब वह लौटना चाहें तो यह असम्भव सा लगता है।

हिन्दू समाज

ईसाई धर्म के समान हिन्दू समाज में भी ईश्वरीय आदेशों को व्यक्तिगत जीवन तक सीमित कर दिया गया है। व्यक्तिगत जीवन में ईश्वरीय आदेश और सामूहिक जीवन में मानवीय आदेश वाला फ़ार्मूला बहुत पुराना हो चुका है। दुनिया बहुत आगे बढ़ चुकी है। आज वैज्ञानिक युग है। ईश्वर को मानने का अर्थ है कि पूर्ण जीवन में ईश्वरीय आदेशों को मानना। यदि ऐसा नहीं है तो फिर यह एक तरह से ईश्वर का इनकार ही माना जाएगा। अगर हम समझते हैं कि ईश्वर है और उसी का आदेश सही है तो पूर्ण जीवन में उसके आदेशों को मानना चाहिए।

आज के वैज्ञानिक युग का आदमी, ईसाइयत को भली-भांति जानता है, यह बात खुलकर सामने आ चुकी है कि उसके पास हमारी समस्याओं का समाधान नहीं है। हिन्दुत्व और बौद्ध मत के दर्शन भी इन समस्याओं का कोई सार्थक हल नहीं पेश कर पाते। हिन्दुत्व में आदमी और आदमी के बीच असमानता पायी जाती है। आर्थिक लूट खसोट की सबसे ख़राब शक्ल महाजनी और ब्याज खोरी, हिन्दुत्व का एक अभिन्न अंग बना हुआ है। हिन्दुत्व के सामूहिक जीवन का नियम, आदमी और आदमी को मिलाने के बजाय अनगिनत वर्गों और लोगों में विभाजित कर देता है। इसके सामाजिक नियम इतने पुराने हो चुके हैं कि पढ़ा लिखा हिन्दू भी इसे तोड़ने को बाध्य हो रहा है।

हिन्दुत्व के पास कोई ऐसा सूत्र नहीं है, जिस पर सब सहमत हों। फलतः ऐसे मुद्दों को उछाला जाता है जो सामुदायिक एकता के लिए हानिकारक हैं। मंदिर मस्जिद विवाद को इसी सन्दर्भ में देखा जा सकता है। रहा इस्लाम तो उसके पास हमारी सारी समस्याओं का हल है। वह केवल किसी क्षेत्र विशेष के लिए नहीं है, बल्कि विश्व के समस्त इंसानों के लिए है। वह सारे इंसानो के लिए दया और रहमत बनाकर भेजा गया है।

अनमोल पुस्तकें

❑ अनूदित कुरआन मजीद	80.00
रूपान्तर : मुहम्मद फ़ारूक ख़ां	
कुरआन मजीद का सरल हिन्दी में अनुवाद, साथ ही संक्षिप्त व्याख्या भी।	
❑ इस्लाम एक अध्ययन	3.00
लेखक : डा0 जमीला आली जाफ़री	
इस्लाम अध्ययन का निचोड़ और इस्लाम को समझने में सहायक।	
❑ पैगम्बरे इस्लाम	3.00
लेखक : प्रो0 रामा कृष्ण राव	
हज़रत मुहम्मद (स0) पर एक संक्षिप्त लेख, अंग्रेजी में भी उपलब्ध।	
❑ डा0 अम्बेडकर और इस्लाम	3.00
लेखक : आर0 एस0 आदिल	
❑ आखिरी पैग़म्बर	1.50
लेखक : डा0 सैय्यद मुहम्मद इकबाल	
❑ शार्ट कट उर्दू कोर्स	5.00
हिन्दी के माध्यम से उर्दू सीखने की उचित पुस्तक।	
प्रौढ़ शिक्षा सिद्धांतों पर आधारित।	
❑ पवित्र कुरआन एक नज़र में	10.00
पवित्र कुरआन की मुख्य-मुख्य शिक्षाओं का संकलन।	
❑ मधुर सन्देश	3.00
लेखक : डा0 इत्तिफ़ात अहमद	
❑ इस्लाम का परिचय	1.50
लेखक : अबू मुहम्मद इमामुद्दीन रामनगरी	
❑ दास्ता से इस्लाम की ओर	10.00
लेखक : कोडिक्कल चिलप्पा	

पुस्तक सूची मुफ़्त मंगायें

मधुर सन्देश संगम

अबुल फज़ल इन्क्लेव, जामिया नगर, नई दिल्ली-25